SSC GD 2025

अवसर बैच

हिंदी

मुहावरे एवं लोकोक्ति

Part -5

LIVE 13-06-2024 06:00 PM

140. चूहे घर में डण्ड पेलते हैं - अत्यधिक दयनीय स्थिति

141. चोट्टी कुतिया जलेबियों की रखवाली - भक्षक को रक्षक का दायित्व सौंपना

142. जबरा मारे रोवे न दे - ताकतवर व्यक्ति का अत्याचार चुपचाप सहना पड़ता है।

143. जहाँ जाय भूखा, वहाँ पड़े सूखा - भाग्यहीन को कहीं सुख नहीं मिलता।

144. जैसी बहै बयार, पीठ तब तैसी दीजै डार –
अवसर के अनुकूल बन जाना चाहिए।

लकड़ी की ओट

145. टट्टी की ओट से शिकार खेलना - छुपकर बुरा काम करना

146. डण्डा सबका पीर - सख़्ती करने से लोग नियन्त्रित होते हैं।

147. दाग़ लगाये लँगोटिया यार - अपनों से ही व्यक्ति धोखा खाता है।

148. नंगा क्या नहायेगा, क्या निचोड़ेगा? - निर्धन से आर्थिक मदद की आशा नहीं करनी चाहिए।

149. नदी-नाव संयोग - थोड़े समय का साथ

150. बिच्छू का काटा रोवे, साँप का काटा सोवे - मीठी मार अधिक बुरी होती है।

11:00 AM

151. मेंढकी को भी जुकाम हुआ है - अपनी शक्ति से बढ़कर बात करना

152. शेख़ी सेठ की, धोती भाड़े की - कुछ न होने पर भी बड़प्पन दिखाना

153. शेरों का मुँह किसने धोया ?- सामर्थ्यवान के लिए कोई उपाय नहीं।

154. इन्द्र की परी – बहुत सुन्दर स्त्री

155. बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद - किसी वस्तु का महत्व न समझना

156. ओछे की प्रीति बालू भीति - निकृष्ट का साथ बहुत मजबूत नहीं होता

157. ग्यारह चुस्त मुद्दई सुस्त - जिसका काम वह देर करें, दूसरे फुर्ती दिखाएं

158. ऊंची दुकान फीके पकवान - दिखावा ही दिखावा

159. एक अनार सौ बीमार - आवश्यकता से अधिक मांग
वस्तु एक चाहने वाले अनेक

160. दूध का दूध पानी का पानी - निष्पक्ष न्याय (स्पष्ट बात करना)

161. गरीबों की जोरू सबकी भाभी - कमजोर से सभी लाभ उठाते हैं

162. जैसी करनी वैसी भरनी - क्रमानुसार फल की प्राप्ति
जैसा करोगे वैसा ही फल मिलेगा।

163. खुदा गंजे को नाखून ना दें - अत्याचारी को शक्ति नहीं मिलनी चाहिए

164. कभी गाड़ी नाव पर कभी नाव गाड़ी पर - एक दूसरे की सहायता करना

165. एक हाथ से ताली नहीं बजती - शत्रुता दोनों पक्षों की गलती से होती है

166. आंख के अंधे नाम नयन सुख - गुणों के विरुद्ध नाम होना

167. अंडे का शहजादा - अनुभवहीन व्यक्ति

168. गुरु गुड़ चेला चीनी - गुरु से चेले का आगे बढ़ जाना

169. आंख का अंधा गांठ का पूरा - मूर्ख धनी

11:00 AM

170. तीन लोक में मथुरा न्यारी - अन्य से विशिष्ट या भिन्न होना

171. आप भले तो जग भला - अच्छे आदमी को सब लोग अच्छे ही मिलते हैं

172. दूध का जला छाछ को फूंक फूंक कर पीता है - बहुत सावधानी बरतना

173. नाम बड़े दर्शन छोटे - प्रसिद्धि के अनुसार गुण ना होना

174. दाल भात में मुसल चंद - बीच में दखल देने वाला